महादेवी वर्मा

बी० ए० पार्ट - I
हिन्दी रचना
डॉ० अनिरुद्ध प्रसाद, हिन्दी विभाग

प्रश्न : किन मूल्यों के आधार पर महादेवी को हिन्दी कविता के क्षेत्र में विशेष स्थान प्राप्त है ? उनके काव्य के आधार पर तर्कपूर्ण उत्तर दीजिए।

उत्तर :

जो घनीभूत पीड़ा या वेदना प्रसाद के काव्य में स्मृति बनकर छायी थी वही भावना महादेवी के काव्य में घनीभूत वेदना बनकर उभड़ी थी। उनके काव्य का सर्वप्रमुख तत्व वेदना ही है। वेदना का आनंद और वेदना का सौंदर्य देखना हो तो महादेवी के काव्य को देखा जा सकता है। उनके काव्य में विश्व नारी का अतृप्त प्रेम, अविकसित राग-भावना की अनुभूति देखी जा सकती है। उनकी दृष्टि अंतर्मुखी और वैयक्तिक है जो उनकी भाव-वस्तु के लिए सबसे उपयुक्त है।

डा० अमृत राय ने महादेवी के कविता के विषय में लिखा है — "महादेवी वर्मा की कविता की पंक्ति-पंक्ति आँसुओं से गीली है, यहाँ तक कि उनका एक-एक आँसु ही उनका देश है। सबसे अलग। उनकी सारी कविताएं एक लड़ी में पिरोयी लगती हैं, उन्हें आँसुओं से मोह है और उनसे वह अपना श्रृंगार करती है क्योंकि उन्हें अपनी व्यथा से मोह है।"

शेरव सादी ने एक प्रश्न के उत्तर में कहा था— "पीड़ा ही मेरा जीवन है, यदि इसे छोड़ दूँगा मैं मर जाऊँगा।" महादेवी के काव्य में कुछ ही स्थिती है। दुख का दर्शन उनको बुद्ध के जीवन से मिला है। वहीं से करुणा का स्रोत उनमें फूटा है। परन्तु उनके काव्य में जो निजीपन है वह उन्हें दुख को सुख से अधिक महत्व देती है। महादेवी खुद कहती हैं — दुख मेरे निकट जीवन का ऐसा काव्य है, जो सारे संसार को एक सूत्र में बाँधने की क्षमता रखता है।

हमारे असंख्य सुख हमें चाहे मनुष्यता की पहली सीढ़ी तक भी न पहुँचा सके, किन्तु हमारा एक बूँद आँसू भी जीवन को अधिक मधुर, अधिक उर्वर बनाए बिना नहीं गिर सकता। मनुष्य सुख को अकेले भोगना चाहता है, परन्तु दुख सबको बाँटकर विश्व-जीवन में अपने जीवन को विश्व-वेदना में अपनी वेदना को इस प्रकार मिला देना जिस प्रकार जल-बिन्दु समुद्र में मिल जाता है।"

महादेवी के काव्य में दुखवाद, पीड़ावाद, एवँ निराशावाद की अभिव्यक्ति हुई है। कवयित्री को दुख के दोनों रूप प्रिय हैं — एक वह जो मनुष्य के संवेदनशील हृदय को समस्त संसार से बाँध देता है और दूसरा वह जो काल और सीमा के बंधनों में जकड़ी है, असीम चेतना का क्रंदन है।

इसमें संदेह नहीं कि महादेवी के काव्य में पलायनवादी तत्व मौजूद हैं, लेकिन उनकी उत्पत्ति और स्थिति का आकलन जरूरी हो जाता है। महादेवी की कविता "मैं नीर भरी दुख की बदली" कविता ही उनकी कविता का परिचय हो सकता है। उन्हीं के शब्दों में — "रात के उर में दिवस की चाह का शर हूँ।" निराला को छोड़कर किसी भी छायावादी कवि में जीवन की इतनी चाह नहीं है जितनी महादेवी में। निराशावाद की अँधेरी रात में जीवन प्रभात की यह चाह महादेवी की कविताओं में बार-बार दीप्त हो उठती है और जितना ही यह अँधेरा घना होता है उतना ही यह चाह बढ़ती जाती है —

"सुभग हँस उठ, उस प्रफुल्ल गुलाब-सा आज।"

क्या जीवन से पराङ्मुख कोई भी व्यक्ति ऐसी पंक्तियां लिख सकता है? क्या स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह कहने से उस ठोस जीवन-आकांक्षा की व्याख्या हो जाती है ... ... व्याप्त है।

महादेवी अपने गीतों में एक देवी की तरह नहीं एक व्यक्ति के रूप में उपस्थित होती हैं। वह अपनी भाव व्यंजना में इस धरती पर काम करने वाले मनुष्य को ही नहीं, वरन् उसका एक और रूप नारी को भी देखती हैं। उनका नारीत्व सामाजिक सीमाओं के अंदर विकास के लिए पंख फड़फड़ाता है। उनकी यही व्याकुलता अनेक सांकेतिक रूपों में उनकी कविताओं में व्यक्त हुआ है। इस नारीत्व को अगर उनकी कविताओं से निकाल दीजिए तब उनका काव्य ~~[illegible]~~ नीरस और निर्जीव हो जाएगा

महादेवी की नारी-प्रकृति की एक सरस विशेषता उनका 'हठ' है। उनके प्राण पागल हैं तो हठीले भी हैं।

"अहीं तारक फूलों में देव !
गूँथना मेरे पागल प्राण —
हठीले मेरे छोटे प्राण !"

महादेवी के व्यक्तित्व में नारी-हठ के साथ कहीं पत्थर जैसी दृढ़ता भी है। उनके अंदर यह क्षमता है कि वह पीड़ा और आँसुओं के व्यापार को ही न समाप्त कर दें, बल्कि तितलियों की रंगीनी और मधुप की गुनगुन छोड़कर वीर नारी के समान दर्प के साथ चुनौती दे सके —

"बाँध लेंगे क्या तुम्हें यह मोम के बंधन सजीले ?
पंथ की बाधा बनेंगे तितलियों के पर रंगीले ?
तू न अपनी छाँह को अपने लिए काँरा बनाना,
जाग तुझको दूर जाना।

महादेवी वर्मा के व्यक्तित्व के विषय में हिन्दी विद्वान आलोचक डा० गंगा प्रसाद विमल ने सही कहा है — परित्यक्त तथा उपेक्षित नारियों के प्रति क्लीवमुख भारतीय समाज के काले हिन्दू

कानून के समक्ष उन्होंने स्व-स्वीकृति के बिना विवाह को डंके के चोट के साथ समाज तथा संसार के कटुतम व्यंग्य प्रहार सहते हुए भी चुनौती देकर उन्होंने अपने जीवन की नींव धरी, उन्होंने जो उचित समझा वही किया, हठ के साथ किया। संसार का कोई प्रलोभन या भय उन्हें विमुख नहीं कर सका।

महादेवी की रचनाओं में जो पीड़ा का बाहुल्य है वैह छायावाद की परिधि से ऊपर उठकर नए साहित्य और सामाजिक आंदोलनों से घनिष्ठ संबंध स्थापित कर लेती है। यही कारण है कि संसार के प्रति उनका दृष्टिकोण निराशावादी होने बावजूद मनुष्य के हृदय के मनोबल को बढ़ाता है। आज के समाज में नारी परतंत्र है, पर उसकी परतंत्रता का कारण सामंती मूल्य है। नारी की परतंत्रता को अगर पीड़ावाद का रूप दे दिया जाए तो इससे सामंती मूल्यों पर चोट पहुंचती है। सामंती संस्कारों से नारी की रक्षा होती है। नारी की दासता एवं परवशता के सहारे जिस आदर्शवाद की रचना हुयी वह टूट पड़े, अगर नारी इन सामंती बंधनों को तोड़ने के लिए कटिबद्ध हो जाए। भारतीय नारी सदियों की सामंती दासता से तभी मुक्त हो सकती है जब शोषित जनता के साथ पूर्ण स्वतंत्रता की लड़ाई में पुरुषों से कंधा मिलाकर साथ-साथ चले।

महादेवी ने अपनी कविताओं के माध्यम से ~~स्त्री~~ ~~स्थिति~~ सामाजिक रूढ़ि को तोड़ने की कोशीश करती है। उनके पीड़ावादने आनंद की सृष्टि है कल के सूरज का आने वाला ~~प्रकाश~~ विहान का प्रकटीकरण उनकी कविताओं के माध्यम से हुआ है। निश्चय ही महादेवी के कविताओं ने भारत में सामाजिक मूल्यों का नया सोपान स्थापित किया है।